अध्याय 2

भूमिका (भाग 2)

अय्यूब ने शैतान की पहली परीक्षा सफलतापूर्वक सह ली। अपनी बड़ी सम्पत्ति और अपने बच्चों के खोने पर भी उसने परमेश्वर की निंदा नहीं की। परन्तु यीशु की परीक्षा की तरह ही शैतान अपनी परीक्षा अधिक देर तक बंद नहीं करता। वह अपनी परीक्षा को जारी रखने के लिए ''मौके की तलाश में'' रहेगा (लूका 4:13)। इस प्रकार हम दूसरी और उससे भी बड़ी भयंकर परीक्षा में आते हैं जिसमें उसे भयंकर शारीरिक कष्ट सहना पड़ा।

हर व्यक्ति की अपनी कीमत है (2:1-6)

[1]फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी उसके सामने उपस्थित हुआ। [2]यहोवा ने शैतान से पूछा, ''तू कहां से आता है?'' शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, ''इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूं।'' [3]यहोवा ने शैतान से पूछा, ''क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? यद्यपि तू ने मुझे बिना कारण उसका सत्यानाश करने को उभारा, तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है।'' [4]शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, ''खाल के बदले खाल; परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। [5]इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।'' [6]यहोवा ने शैतान से कहा, ''सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।''

आयतें 1, 2. ये आयतें पिछले अध्याय वाली अधिकतर आयतों से मेल खाती हैं (1:6, 7 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 3. फिर से 1:8 के उन्हीं गुणों को दोहराते हुए परमेश्वर ने अपने धर्मी **दास अय्यूब** की ओर ध्यान दिलाया, इस बार **तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है**, जोड़ा गया। संज्ञा शब्द ''खराई'' (*thummah, थुम्माह*) उसी शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है ''खरा'' (*tham, थाम*) है (1:1 पर टिप्पणियां देखें)। जैसा पहले कहा गया है, दुःख झेलते हुए भी खराई में बने रहना अय्यूब की पुस्तक का मुख्य विषय है।

''यद्यपि तू ने मुझे बिना कारण उसका सत्यानाश करने को उभारा।'' ''उभारना'' (*suth, सुथ*) शब्द का अर्थ है ''उकसाना,'' ''बहकाना,'' ''फुसलाना।''[1] इसका अर्थ किसी को ऐसे काम को करने के लिए फुसलाना है जो वह आम तौर पर न करता हो। ''बिना कारण'' का अनुवाद ''बिना मकसद, बिना असर'' भी हो सकता है।[2]

आयत 4. खाल के बदले खाल लोकप्रसिद्ध कहावत लगती है। इसका बोध पहले अध्याय में शैतान द्वारा की गई बातों से मेल खाता है (1:9-11)। **''परन्तु प्राण के बदले मनुष्य**

अपना सब कुछ दे देता है।'' हर मनुष्य की अपनी कीमत है! यहां इसका सामान्य अर्थ यह है कि हर व्यक्ति अपने प्राण को बचाने के लिए कुछ भी दे देगा।

आयत 5. ''इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।'' वाक्य का पहला भाग इसी बात को दर्शाता है, और दूसरा भाग उस परिणाम को दर्शाता है जो इस पर निर्भर है। शैतान यह कह रहा था कि यदि अय्यूब को उसके शरीर में कष्ट दिया जाए, तो इसका परिणाम यह होगा कि वह परमेश्वर की निंदा करेगा।

आयत 6. यहोवा ने अय्यूब को दुःख देने के लिए **शैतान** के **हाथ** में दे दिया, परन्तु उसने यह शर्त रखी कि वह अय्यूब का **प्राण छोड़** देगा।

अय्यूब का अत्यधिक कष्ट (2:7, 8)

[7]तब शैतान यहोवा के सामने से निकला, और अय्यूब को पांव के तलवे से ले सिर की चोटी तक बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया। [8]तब अय्यूब खुजलाने के लिये एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया।

आयत 7. अय्यूब के कष्ट की सही-सही बीमारी का पता लगाने की कोशिश करना बेकार है। फिर भी जॉन ई. हार्टले ने इसका एक विचार करने योग्य विवरण दिया है:

> अय्यूब को लगी सही-सही बीमारी का पता नहीं है, क्योंकि फोड़े [इब्रा. *sh^{e}chin, शेचिन*] गैर तकनीकी शब्द नहीं है। अय्यूब के भाषणों से कुछ लक्षण जो उसने बताए उनमें दर्दनाक खुजलाहट ''पीड़ादायक खुजलाना'' (2:8); कूरूपता (2:12), खुजलाने के दाग, पपड़ी, घाव, और रिसाव (7:5), कीड़ों के संक्रमण से होने वाले घाव (7:5), कांप कांप कर बुखार (21:6; 30:3), चमड़ी का काला पड़ जाना और कंपकंपी लगना (30:30), रोने से आंखों का लाल हो जाना और सूजना (16:16), दस्त (30:27), अनिद्रा और बेसुधि (7:4, 13-14), घिगी (7:15), मुंह से बदबू (19:17), कमजोरी (19:20), और पूरे शरीर में अत्यधिक पीड़ा (30:17)।[3]

आयत 8. ठीकरा किसी बर्तन या पात्र का टूटा हुआ टुकड़ा है जिसे कूड़े में फैंक दिया जाता है। यह भी हो सकता है कि अय्यूब को यहां पर एक निकाले हुए व्यक्ति के रूप में दिखाया गया हो। वह नगर के कूड़े की **राख पर बैठ गया** था। कुछ लेखकों ने यह शंका जताई है कि उसका कष्ट कोढ़ जैसा था, जिसका अर्थ यह था कि उसे सामान्य मानवीय सम्बन्धों से अलग किया गया था (देखें लैव्यव्यवस्था 13:45, 46; गिनती 12:9-15)।

अय्यूब की पत्नी की प्रतिक्रिया (2:9, 10)

[9]तब उसकी स्त्री उससे कहने लगी, ''क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।'' [10]उसने उससे कहा, ''तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?'' इन

सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया।

आयत 9. अय्यूब की पत्नी का उल्लेख पुस्तक में तीन बार हुआ है (2:9; 19:17; 31:10)। बात वह केवल यहीं पर करती है। अय्यूब की पीड़ा और हानि निश्चय ही उसकी पहली परीक्षा जैसी ही होगी। यहां पर उसे अपने पति की संगति और साथ देने से भी वंचित कर दिया गया। अब उससे सहा नहीं जा रहा था, जिस कारण बोल उठी, ''**क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।**'' उस पर दोष लगाने की जल्दबाजी करने से पहले हमें यह समझना आवश्यक है कि कई बार जीने से मृत्यु बेहतर प्रतीत होती है! यह अत्यधिक पीड़ा और कष्ट से छुटकारा दिला देती है। इच्छा मृत्यु निश्चित रूप में हल नहीं है। परन्तु जब कोई विश्वासी मसीही असाध्य बीमारी से जूझ रहा होता है और हमसे यह प्रार्थना करने के लिए कहे कि हम उसके प्रार्थना करें कि वह मर जाए और उसे छुटकारा मिले तो हम क्या करते हैं? निश्चय ही अंतिम वाक्यांश, ''परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा'' उपयुक्त नहीं था जैसा कि अय्यूब के उत्तर से स्पष्ट है।

आयत 10. ''**तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है।**'' मूढ़ स्त्री के लिए इब्रानी शब्द (*hann^{e}baloth*, *हन्नेबालोथ*) में, नैतिक रूप में भ्रष्ट, नीच, निष्ठुर और बेलगाव होने का संकेत है।[4] ''**क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?**'' ''दुःख'' शब्द (*ra'*, *रा*) का अनुवाद ''बुराई'' किया जाता है परन्तु इसमें विपत्ति या आफ़त की बात का संकेत भी हो सकता है।[5] **इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया।** परमेश्वर में अय्यूब के विश्वास की कितनी सुन्दर गवाही है! एक लेखक का कहना है कि परमेश्वर में अपने विश्वास को ऐसी ऊंचाई पर उठाने के बजाय उसे गिरा देना अधिक आसान है।[6]

अय्यूब के मित्र (2:11-13)

[11]जब तेमानी एलीपज, और शूही बिलदद, और नामाती सोपर, अय्यूब के इन तीन मित्रों ने इस सब विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थीं। तब वे आपस में यह ठानकर कि हम अय्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको शान्ति देंगे, अपने-अपने यहाँ से उसके पास चले। [12]जब उन्होंने दूर से आंख उठाकर अय्यूब को देखा और उसे न पहचान सके, तब चिल्लाकर रो पड़े; और अपना अपना बागा फाड़ा और आकाश की ओर धूल उड़ाकर अपने अपने सिर पर डाली। [13]तब वे सात दिन और सात रात उसके संग भूमि पर बैठे रहे, परन्तु उसका दुःख बहुत ही बड़ा जान कर किसी ने उससे एक भी बात न कही।

इस पद्य में अय्यूब के तीन मित्रों का परिचय मिलता है जिनकी आगे हुई बातचीत में प्रमुख भूमिका है। उनके बारे में हम केवल उतना ही जानते हैं जितना इन आयतों से मिलता है और आगे दिए उनके भाषणों से पता चलता है। दुःख उठाने के बारे में उनके बड़े स्पष्ट विचार थे, जिन्हें उन्होंने बताया और उत्तर अय्यूब ने दिए।

आयत 11. वे मित्र अलग-अलग नगरों से आए थे। **वे आपस में यह ठानकर कि हम**

अय्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको शान्ति देंगे, अपने अपने यहाँ से उसके पास चले। नि:संदेह अय्यूब की दशा को सुनने और ऊज़ देश में उनके पहुंचने के बीच में काफ़ी समय लग गया था।

तेमानी एलीपज। एलीपज नामक का एक आदमी एसाव का पुत्र था और उसका एक पुत्र था जिसका नाम तेमान था (उत्पत्ति 36:10, 11)। परन्तु ऐसा लगता नहीं है कि उत्पत्ति की पुस्तक वाला एलीपज ही यह व्यक्ति था। परन्तु अय्यूब का मित्र एदोम में तेमान नगर या जिले में से आया जो कि ज्ञान का प्राचीन केन्द्र था (यिर्मयाह 49:7; हबक्कूक 3:3)। आम तौर पर यह माना जाता है कि एलीपज तीनों मित्रों में सबसे बड़ा था।[7] इसके अलावा 15:10 की बात से यह संकेत मिलेगा कि तीनों मित्र अय्यूब से बड़े थे।

शूही बिलदद। बिलदद नाम नूज़ी पट्टिकाओं में मिलता है।[8] उसके घर शूह का स्थान पक्का मालूम नहीं है कि कहां पर था। अधिकतर विद्वान इस बात से सहमत हैं कि शूह यहूदी नगर नहीं था। अब्राहम का शूह नामक एक बेटा था जिसे उसने ''पूर्व देश में'' भेज दिया था (उत्पत्ति 25:2, 6); इसलिए यह सम्भव है कि यह नगर उसी के नाम से हो।

नामाती सोपर। वह तीनों मित्रों में सबसे बाद में बोलने वाला था। नामा नामक एक नगर यहूदा में था (यहोशू 15:41); परन्तु यहां बताया गया नगर कोई और हो सकता है।

लेखक ने तीनों मित्रों के अलग-अलग व्यक्तित्वों को विस्तार से बताने की कोई कोशिश नहीं की। परन्तु प्रत्येक के भाषण का विश्लेषण करने से निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। (तीनों मित्रों पर अधिक जानकरी के लिए देखें *परिचय,* पृष्ठ 11-13.)

आयत 12. अय्यूब के मित्र उसकी हालत देखकर **रो पड़े**। यह तथ्य कि **अपना अपना बागा फाड़ा और आकाश की ओर धूल उड़ाकर अपने अपने सिर पर डाली**, उनके गहरे दु:ख को दर्शाता है। निकट पूर्व में प्राचीनकाल में दु:ख को दर्शाने का यह आम तरीका था।

आयत 13. सात दिन और सात रात मुर्दों के लिए शोक मनाने का सामान्य समय होता था (उत्पत्ति 50:10; 1 शमूएल 31:13)। मित्रों ने खामोशी से शोक करने में अपनी सबसे बड़ी समझ दिखाई। होमेर हेली का यह विचार था कि वे तसल्ली की बातें कहकर अय्यूब को शांति नहीं दे पाए क्योंकि इससे उनकी इस शिक्षा का उल्लंघन हो जाना था कि अय्यूब को किसी बड़े पाप का दण्ड मिल रहा था।

प्रासंगिकता

यह कैसा होगा? (अध्याय 1; 2)

1991 में केटोरोड ने बास्केटबॉल के सुपर स्टार माइक जॉर्डन के साथ करोड़ों डॉलर का करार किया। उनके कैम्पेन का सलोगन ''बी लाइक माइक'' (माइक जैसे बनो) विश्वप्रसिद्ध हो गया। विज्ञापन में कहा गया था, ''काश मैं माइक जैसा बन सकूं ... काश केवल एक दिन के लिए मैं वैसा बन सकूं ... काश मैं माइक जैसा बन सकूं।'' समय-समय पर बहुत से लोग इस बात पर चकित होते हैं कि किसी दूसरे के जैसा बनना या उनकी तरह जीना कैसा होता है।

यह कैसा होगा ... ?

... अय्यूब के दु:खों से पहले उसके जैसा होना? अध्याय 1 में अय्यूब को बहुतायत से आशीष प्राप्त थी। अय्यूब हर सुबह जब उठता तो उसके होठों पर गीत होते थे। शुरू-शुरू में सब कुछ उसकी मर्जी से चल रहा था। अय्यूब को एक पत्नी और दस अनमोल बच्चों की आशीष मिली थी और उसने अपने घर को यहोवा पर विश्वास से बनाया था। भजन संहिता 127 कहता है, ''यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होगा। ... देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है, क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसका तर्कश उनसे भरा है।'' अय्यूब का ''तर्कश'' बच्चों से भरा हुआ था और यह एक बहुत बड़ी आशीष है। इसके अलावा अय्यूब को स्वास्थ्य और समृद्धि की भी आशीष मिली हुई थी। बाइबल बताती है कि वह ''बुराई से दूर रहता था'' और उसका वर्णन करते हुए बताती है कि पूर्वी देशों के लोगों में वह सबसे बड़ा था (1:1, 3)। अय्यूब एक अशीषित व्यक्ति था जिसे मालूम था कि उसे दूसरों के लिए आशीष बनने के लिए आशीष मिली है।

... अपने बच्चों की आत्मिक सेहत के प्रति गम्भीर होना? अय्यूब 1:5 कहता है कि ''अय्यूब उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था।'' इसमें कोई शक नहीं है कि अय्यूब के बच्चे परमेश्वर के समर्पण और उनके उसके प्रेम को समझते थे। उसका विश्वास उसके द्वारा किए जाने वाले बलिदानों में दिखाया जाता था। एडगर ए. गैस्ट ने अपनी कविता ''सरमन्स वी सी'' में अच्छा लिखा है:

> मैं सुनने के बजाय देखना पसंद करूंगा;
> मैं चाहूंगा कि कोई मुझे केवल रास्ता बताने के बजाय मेरे साथ चल पड़े।
> कान की पुतली के बजाय आंख की पुतली बेहतर है,
> बढ़िया सलाह सुलझाने वाली है, पर नमूना हमेशा साफ समझ आता है।[10]

पिताओ, आप अपने बच्चों के लिए क्या बलिदान कर रहे हो? क्या वे देखते और जानते हैं कि आप परमेश्वर के प्रति अपने और उनके सम्बन्ध के प्रति गम्भीर हो?

... उस दुष्ट के निशाने पर होना? अय्यूब उस दुष्ट के निशाने पर था। शैतान उसके बच्चों और उसकी सम्पत्ति का नाश करके संतुष्ट नहीं हुआ बल्कि वह उसके स्वास्थ्य पर आक्रमण करने के लिए लौट आया। शैतान का लक्ष्य अंत में परमेश्वर के साथ अय्यूब के सम्बन्ध को नाश करना था। यीशु ने एक बार पतरस से कहा था, ''शमौन, हे शमौन! देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूं के समान फटके परन्तु मैंने तेरे लिए विनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे'' (लूका 22:31)।

शैतान हमारा विरोधी है वह आम तौर पर उन्हीं को निशाना बनाता है जो परमेश्वर में विश्वास रखते और उसमें जीवन बिताते हैं। शैतान हमारे विश्वास को नष्ट करने की कोशिश में है। इसीलिए इफिसियों 6:11, 16 हमें बताता है, ''परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।'' 1 पतरस 5:8, 9 में लेखक ने अपने पाठकों को बताया:

सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुःख सह रहे हैं।

... *''अकल्पनीय'' में से गुज़रना और यह कभी पता न चल पाना कि क्यों हुआ?* अय्यूब के साथ ''अकल्पनीय'' बात हुई और उसे कभी पता नहीं चला कि ऐसा क्यों हुआ। फिर भी इस सब के दौरान अय्यूब ने अपनी खराई और अपने विश्वास को बनाए रखा। रूत के लिए ''अकल्पनीय'' अपने पति, देवर और ससुर को खोना था। हिज़कियाह के लिए ''अकल्पनीय'' यह समाचार सुनना था कि उसे ''अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे'' क्योंकि वह मरने को था। दाऊद के लिए ''अकल्पनीय'' इस सच्चाई का पता चलना था कि उसके अपने बेटे ने उसे तुच्छ जाना था। ''अकल्पनीय'' हमारे साथ भी हो सकता है।

बहुत साल पहले मैं एक 53 वर्षीय मसीही महिला के साथ अस्पताल में था जिसका पति उस समय मसीही नहीं था। डॉक्टर उसके कमरे में आए और उसे ''अकल्पनीय'' समाचार दिया। उन्होंने उसे बताया कि उसे कैंसर है और वह छह महीने ही जी सकती है। आप उसकी जगह होते तो क्या करते? उसने अपने पति की आंखों में देखा और कहा, ''मुझे नहीं मालूम कि आप कैसे करोगे, पर मैं प्रभु के साथ चल रही हूं।'' यह उसका नज़रिया है! यह महिला तीन महीने बाद मर गई पर उसका विश्वास बरकरार रहा। उस स्त्री के विश्वास के कारण मुझे बाद में उसके पति को बपतिस्मा देने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

... *अय्यूब की पत्नी होना?* बहुत से लोग अय्यूब की पत्नी के साथ कठोरता बरतते हैं क योंकि जो उसने कहा वह अच्छी सलाह नहीं थी। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि उसने भी बहुत दुःख झेला था। उसने भी अपने परिवार को, अपने खेतों को खोया था और उसका पति अत्यधिक पीड़ा में था। वह भी दुःखी थी। उसे भावनात्मक सदमा लगा था और वह गहरा दुःख झेल रही थी। उसने कुछ ऐसी बातें कहीं जो उपयुक्त नहीं थीं। क्या आपने कभी कुछ ऐसा कहा है जिससे बाद में आपको अफ़सोस हुआ हो।

... *यह पता होना कि आप ही वे व्यक्ति हैं, जिसका परमेश्वर को ध्यान है?* अपनी पुस्तक *लाइफ ऑन द ऐश हीप* में जिम मैक्विगन ने कहा है, ''अय्यूब को चाहे पता नहीं था कि वह अपने लिए परमेश्वर की लड़ाई लड़ रहा है। हमें याद रखना आवश्यक है कि परमेश्वर अय्यूब का ध्यान रखता है।''[11] काश हमारे पीछे आने वाले लोग हमें विश्वासी पाएं। काश समर्पण के हमारे जीवनों से वह परमेश्वर में भरोसा रखें और उसकी आज्ञा मानने की प्रेरणा पाएं। क्या आपका भरोसा परमेश्वर पर है?

''कुछ देर'' (2:1-8)

यह तथ्य कि शैतान अय्यूब को अध्याय 1 में इतना विनाशकारी आघात पहुंचाने के बाद उसे परखने के लिए फिर से लौट आया। उसके हठी स्वभाव को दिखाता है। यीशु की परीक्षा के बाद शैतान ''कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया'' (लूका 4:13)। इसमें कोई संदेह नहीं कि शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा उसकी पूरी सेवकाई के दौरान होती रही, जो उसके दुःख उठाने में अपने चरम पर पहुंच गई। केवल कल्पना ही की जा सकती है कि यीशु ने ऐसी परीक्षाओं का

सामना गतसमनी बाग में प्रार्थना करते समय पिलातुस के सामने पेशी के दौरान, और गुलगुत्ता में क्रूस पर दु:ख उठाने के समय पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए कैसे किया।

आज शैतान ''मौके'' की तलाश में हम पर आक्रमण करता रहता है। वह हम पर तभी आक्रमण करता है, जब हम कमज़ोर और असुरक्षित होते हैं। इसी कारण हमें ''सचेत हो [ने]'' को कहा गया है (1 पतरस 5:8)। याकूब ने लिखा है, ''परमेश्वर के अधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे सामने से भाग निकलेगा'' (याकूब 4:7)। मसीही जीवन एक आत्मिक युद्ध है जिसमें लगातार चौकसी और सफलता के लिए लड़ाई के लिए तैयार रहना आवश्यक है (इफिसियों 6:10-20)।

हर मनुष्य की अपनी कीमत है (2:4)

शैतान ने यह मान लिया कि अय्यूब अपने जीवन को बचाने के लिए वह सब बलिदान कर देगा जो उसके पास था (बच्चे, सेवक, जानवर और झुण्ड) (2:4)। अन्य शब्दों में शैतान अय्यूब पर आत्म-केन्द्रित और अपने आपको बचाने का आरोप लगा रहा था। आज कई बार कहा जाता है कि ''हर आदमी की अपनी कीमत है।'' विचार यह है कि व्यक्ति अपनी खराई के साथ समझौता कर लेगा यदि उसे बेहतर कीमत मिल जाए। परन्तु ऐसे लाभ केवल थोड़ी देर के होते हैं और वे जल्द जाते रहते हैं। यीशु ने इस मुद्दे को ये प्रश्न पूछते हुए इसे अपने शब्दों में बताया: ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?'' (मरकुस 8:36, 37)। मसीही लोगों के रूप में हमें नैतिक पसन्द उसी आधार पर चुननी आवश्यक है जो परमेश्वर को पसन्द है, न कि जो हमें सांसारिक दृष्टिकोण से ''लाभदायक'' लगती हो। यीशु की तरह हमें सच्चाई के लिए बलिदान (यहां तक कि अपने प्राण) देने को तैयार होना आवश्यक है। डी. स्टिवर्ट

शांति देने वाले (2:11-13)

अय्यूब की विपत्ति के बारे में सुनकर उसके मित्र आकर सप्ताह भर खामोश होकर उसके साथ बैठे रहे (2:11-13)। बहुत बार मसीही लोग बड़ी विपदा में पड़े लोगों की सहायता के लिए इसलिए नहीं जाते कि उन्हें ''समझ नहीं आता'' कि ऐसी परिस्थिति में ''वे क्या कहेंगे।'' परन्तु कई बार हमें कहने की आवश्यकता नहीं होती। हमारी उपस्थिति ही बड़ी पीड़ा या दुख उठाने वाले के लिए बड़ी तसल्ली का कारण होती थी। प्रेरित पौलुस ने लिखा है, ''आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो, और रोनेवालों के साथ रोओ'' (रोमियों 12:15)।

डी. शैकलफोर्ड

टिप्पणियां

[1]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:749. [2]एच. एच. रोअले, अय्यूब, द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 37. [3]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.

ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 82. [4]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 67, एन. 51. [5]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 44. [6]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 94. [7]देखें टी. एच. रोबिन्सन, *अय्यूब ऐंड हिज़ फ्रेंडस* (लंदन: एससीएम प्रैस लिमिटेड, 1954) 51. [8]रोअले, 40. [9]हेली, 45. [10]*चर्च बुलेटिन बिट्स,* अंक 1, संकलन जॉर्ज डब्ल्यू. नाइट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 57 में एडगर ए. गेस्ट, ''सरमन वी सी।''

[11]जिम मैक्विगन, *लाइफ ऑन द ऐश हीप: अय्यूब फाइट्स गॉड'स बैटल फ़ॉर हिम* (वेब्ब सिटी, मिसोरी: कोवनेंट पब्लिशिंग, 2003), 13.